जन संपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 18 फरवरी 2019

संस्कृत विभाग जामिया में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के संस्कृत विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान तथा
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी का विषय संस्कृत के बहुआयामी पक्ष एवं वृहत्तर विश्व था। संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र दिनांक 15 फरवरी को अंसारी सभागृह में आयोजित किया गया जिसके मुख्य अतिथि प्रोफेसर रमेश कुमार पांडेय, कुलपति श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली, श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, प्रो. दीप्ति त्रिपाठी, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन भारत सरकार तथा प्रोफेसर वहाज्जुद्दीन अल्वी संकाय अध्यक्ष मानविकी एवं भाषा संकाय थे।

इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ वैदिक मंगलाचरण और कुरान की आयतों के पाठ के साथ हुआ। प्रोफेसर दीप्ती त्रिपाठी ने संगोष्ठी के बीज-वक्तव्य को प्रस्तुत किया और बताया कि संस्कृत भाषा ज्ञान विज्ञान की माध्यम होती है एक संस्कृतज्ञ न केवल भाषा का ज्ञाता होता है अपितु उसमें निहित समस्त विषयों का भी ज्ञाता होता है। प्रोफेसर रमेश कुमार पाण्डेय ने उदहारण प्रस्तुत करते हुए कहा कि यदि केवल एक ही संस्कृत की पुस्तक को ठीक ढंग से पढ़ा जाए तो हम पूरे वाङ्मय को समझ सकते हैं। श्री अतुल कोठारी ने मंत्र उच्चारण के लाभ बताए ।

इस त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में संस्कृत और प्रबंधन, संस्कृत और संगणकीय भाषा विज्ञान, संस्कृत दर्शन, संस्कृत और रंगमंच तथा वैदिक ज्ञान परंपरा इत्यादि विषयों पर विचार विमर्श हुआ जिसमें भारतवर्ष के प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया । संस्कृत तथा विज्ञान संस्कृत तथा मीडिया तथा आधुनिक संस्कृत साहित्य पर भी विद्वानों के द्वारा विचार रखे गए।

इस संपूर्ण संगोष्ठी में डेढ़ सौ से अधिक संपूर्ण भारतवर्ष के छात्रों ने अपने शोध प्रस्तुत पत्र प्रस्तुत किये । संगोष्ठी में 16 फरवरी को शाम के समय अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत राधावल्लभ त्रिपाठी, भागीरथी नंद,जीतराम भट्ट,अभिराज राजेंद्र मिश्र, परमानंद झा, भारतेंदु पांडे तथा बलराम शुक्ल ने अपनी संस्कृत कविताओं के माध्यम से पुलवामा के शहीदों को श्रद्धांजलि दी ।

समापन सत्र में अध्यक्ष श्री ए पी सिद्धीकी कुलसचिव जामिया मिल्लिया इस्लामिया, सारस्वत अतिथि प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल, सदस्य सचिव भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली उपस्थित थे। प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने संस्कृत के साथ वृहत्तर विश्व का मंजुल समन्वय छात्र समुदाय के समक्ष उपस्थित किया जिसके द्वारा संस्कृत की महत्ता संस्कृत की गरिमा संस्कृत की प्रतिष्ठा जन मन में व्याप्त हो ऐसा सराहनीय प्रयास संस्कृत के आगे आने वाली पीढ़ियों के द्वारा किया जाना चाहिए यही उनका मंतव्य था ।

प्रो. शुक्ल ने बताया कि संस्कृत न केवल एक भाषा है अपितु संपूर्ण ज्ञान संपदा को स्वयं में समाहित किए हुए है, बस आज की आवश्यकता है कि उस भाषा को लेकर समुचित कार्य किया जाए जिससे विश्व पटल पर वह अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सके तथा संस्कृत ही वह भाषा हो सकती है जिसके माध्यम से विकास के साथ-साथ उनमें संतुलन की व्यवस्था भी बनाई जा सकती है। विभागाध्यक्ष प्रो. गिरीश चन्द्र पन्त ने संगोष्टी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं संयोजक डॉ. अभय कुमार शांडिल्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया संयोजक

संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली
एवं
भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित
त्रि–दिवसीय राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी
संस्कृत के बहुआयामी पक्ष एवं बृहत्तर विश्व
(Multi Dimensional Aspects of Sanskrit & Larger World)
१५ से १७
२०१६
संयोजक
डॉ. अभय कुमार शाण्डिल्य
डॉ. धनञ्जय मणि त्रिपाठी
ICPR
प्रो. वहाजुद्दीन अल्वी

संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली
एवं
भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित
त्रि–दिवसीय राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी
संस्कृत के बहुआयामी पक्ष एवं बृहत्तर विश्व
(Multi Dimensional Aspects of Sanskrit & Larger World)
१५ से १७ फरवरी २०१६
ICPR